

वीरजी मुनि विरचित
कर्मविपाकनो रास.

अथवा

जबुपृष्ठानो रास.

तथा

गौतमपृष्ठानो चोपाइ.

ए ग्रंथ.

शुजाशुज कर्मोना फलनो दर्शावनार हो-
वाथी सर्व श्रावक चाश्योने जणवा वां-
चवा माटे उपयोगी जाणीने,
श्रावक जीमसिंह माणके,
राजनगरमध्ये,
राजनगर मुद्रायंत्रमां ठापी प्रसिद्ध कर्षो.

संवत् १९६६

सने १९१०

जन्म सूचन

इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य पूर्ण होते ही नियत

समयावधि में शीघ्र वापस करने की कृपा करें.

जिससे अन्य वांचकगण इसका उपयोग कर सकें

॥ अथ ॥

॥ श्री कर्मविपाक अथवा जंबू पृष्ठानो
रास प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सकल पैदारथ सर्वदा, प्रणमुं श्यामल पास ॥
नमिये तेहने ऊठि नित्य, परमानंद प्रकाश ॥ १ ॥
गोयम गणहर पय नमी, कर्मविपाक त्रिधि जोय ॥
फल जाखुं कृत कर्मनां, सांजलजो सहु कोय ॥ २ ॥
सोहमस्वामी समोसख्या, चंपानगरी मांहे ॥ जंबू प्रभु
प्रणमी करी, पूठे प्रश्न उत्साहे ॥ ३ ॥ कहो जगवन्
धनवंत सुखी, शे कर्मे जीव शाय ॥ दारिद्री निर्धन
दुःखी, कुण कर्मे कहेवाय ॥ ४ ॥ बलतुं बोले केवली,
सुण जंबू सुविचार ॥ जला प्रश्न तें पूठिया, जविक
जीव हितकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल धेहेली ॥ देशी चोपाइनी ॥

॥ साधु जणि दीये बहु मान, पहले जेणे दीधुं
दान ॥ रुद्धि वृद्धि ते पामे घणी, आशा पूरे सवि मन
तणी ॥ १ ॥ दान न दीधुं जेणे नरे, ते परघर सांगता

(१)

फिरे ॥ मागंतां पण न दीये कोय, अदत्त तणां फल
एहवां होय ॥ १ ॥ किण कर्मे अति खीणुं अंग, किण
कर्मे पुष्टता प्रसंग ॥ गोली सरिखुं मोटुं पेट, दुःख
देखंतां चाले नेट ॥ ३ ॥ गिद्ध पारकां जोतो फरे, वि-
घन पारका हियडे धरे ॥ निंदा करतां न लहे शंक,
परज्वमां ते थाये रंक ॥ ४ ॥ राजाना फाड्या चंडार,
रत्न तेहनां चोख्यां सार ॥ थूलदेह ते करणी तणुं, दीले
मांस वधे अति घणुं ॥ ५ ॥ एक दीकरी आवी रहे,
पुत्र तणुं नामज नवि लहे ॥ कोणे कर्मे सीधां वली,
वलतुं बोले एम केवली ॥ ६ ॥ वप्रजाति तव खेती क-
री, गाय एक ते जाये चरी ॥ क्रोधे ब्राह्मण मारी गाय,
तिण पापे एक पुत्री धाय ॥ ७ ॥ एक पुरुष जे नारी
वरे, ते संघली जाये जमपुरे ॥ कोण कर्म पहाते तेहने,
होवे न नारी एक जेहने ॥ ८ ॥ पूरवे जव नारी अति
घणी, विण अपराधे तेणे अवणणी ॥ शस्त्रघात विष-
घाते करी, मारी पाप बुद्धि मन धरी ॥ ९ ॥ जेह जी-
वने उपजे जरम, तेहज पाते कहो कोण कर्म ॥ उत्तम
जाति धने गर्वियो, जांग अफीण सुरापान कियो ॥
१० ॥ विषम ज्वर अति दाह उपजे, तेहने कर्म कहो
कोण जजे ॥ पोठी गाडां वाहे उंट, जरे जार अधिकी

(३)

तस पूंठ ॥ ११ ॥ उनाले अग्नि ज्वले अति घणी, धन
खोजे थाये ते जणी ॥ तापे पीड्यां आर्त्ति करे, तृषा क
री पशु दुःखियां भरे ॥ एह पाप जाणो तस शिरे ॥
१२ ॥ चार पांच ठ मासे ऊरे, अधिको नारी गर्भ नहिं
धरे ॥ कोण कर्म पोहोते तेहने, ते संबंघ कहो हित
घणे ॥ १३ ॥ आहेडी वनमांहे शोर, करे पापीया पाप
अघोर ॥ पाडे हरिणने बहुला त्रास, गर्भपात तिणे
गर्जनो नाश ॥ १४ ॥ विधवा बालपणे जे थाय, तेहने
पाप कोण कहेवाय ॥ निज जरतारने मारी हाथ, रमे
रंगे बीजानी साथ ॥ १५ ॥ पुत्र जनम पामीने मरे,
संतति एक नहिं तसु ~~कोण~~ कर्म पूरव जव क-
ख्यां, तेणे संतान ~~अवतस्वां~~ ॥ १६ ॥ पहेली ढाल
ए पूरी करी, कर्म ~~विपाकयकी~~ बरूरी ॥ ~~कर्म~~ कर्म
ढाले नर नार, वीर ~~सुखी~~ संसारे ॥ १७ ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मृग बराह शंबर शशा, महिष ठाग बक मोर ॥
तित्तर पोपट चरकलां, हंस कपोत चकोर ॥ १ ॥ मारे
एहवा जीवने, हाथ सरासर नाडी ॥ मीनांदिक् जल
चर हणे, जाळे पाशमां पाडी ॥ २ ॥ पशु पंखी माणस

(४)

तणां, जेह विणासे बाल ॥ नाश करे जू बीखनो, ते
वांजीया संजाल ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

वाट जौवंतां श्याव्यांजी ॥ सुंदर साहेली ॥ मोर
लीये टहुकायांजी ॥ सुंदर गोरडली ॥ ए देशी ॥

॥ पुत्र पांच प्रकारना कहियेजी ॥ शिष्य तुमे सां-
नलो ॥ जेहवां कीधां तेहवां फल लहियेजी ॥ शिष्य०
॥ पहेलो थापणमोसो जाणोजी ॥ शिष्य० ॥ बीजौ
रणियो पुत्र वखाणोजी ॥ शिष्य० ॥ १ ॥ त्रीजो बेरी
पुत्र जणीजेजी ॥ शिष्य० ॥ चौथो उदासीन गणीजे
जी ॥ शिष्य० ॥ पुत्र पांचमो ते सुखकारीजी ॥ शिष्य०
॥ ते जाणो तुमो निरधारीजी ॥ शिष्य० ॥ २ ॥ थापण
मूकी जाये कोइजी ॥ शिष्य० ॥ उलवीने राखे सोइजी
॥ शिष्य० ॥ धणी आवीने जव मागेजी ॥ शिष्य० ॥
कहे ताहारुं कांहि न लागेजी ॥ शिष्य० ॥ ३ ॥ में हा-
थो हाथे दीधीजी ॥ शिष्य० ॥ तुमे घरमें मूकी सी-
धीजी ॥ शिष्य० ॥ तुं ठाम चूढयो ठे जाईजी ॥ शि-
ष्य० ॥ ताहरे महारे कोण सगाइजी ॥ शिष्य० ॥ ४ ॥
क्रोधे ते अति धडधडताजी ॥ शिष्य० ॥ दरबारे जाय

ते बढताजी ॥ शिष्य० ॥ साह्नी विण कहे रायजी ॥
शि० ॥ अमथी कांइ न कहेवायजी ॥ शिष्य० ॥ ५ ॥
प्राणांत लगे दुःख व्यापेजी ॥ शि० ॥ तोही लोत्री पा
हुं नापेजी ॥ शि० ॥ ते मरण पामे तसु दुःखेजी ॥ शि०
॥ आत्री उपजे ते कुखेजी ॥ शिष्य० ॥ ६ ॥ पहेली अ-
घरणी कीजेजी ॥ शि० ॥ द्रव्य बहुलुं तिहां खरचीजे
जी ॥ शि० ॥ घर पुत्र थई जब आवेजी ॥ शि० ॥ तव
आशा पूरी कहावेजी ॥ शिष्य० ॥ ७ ॥ वधामणि दी-
धी जेणेजी ॥ शि० ॥ लखमी पामी बहु तेणेजी ॥ शि०
॥ जन्मोतरी जोषीये कीधीजी ॥ शि० ॥ बखशीस घ-
णी तस दीधीजी ॥ शिष्य० ॥ ८ ॥ रूपवंत घणुं गुणवं
तोजी ॥ शि० ॥ सघले लक्षणे संजुत्तोजी ॥ शि० ॥ ज्ञा
ट ज्ञोजक ज्ञानु ज्ञवायाजी ॥ शि० ॥ गीत गाये नाचे
सवायाजी ॥ शिष्य० ॥ ९ ॥ दान देइ घणुं संतोषेजी
॥ शि० ॥ निजनाति कुटुंब सह पोषेजी ॥ शि० ॥ पान
फोफल नारीयर दीधांजी ॥ शि० ॥ पहेरामणी करी
राजी कीधां जी ॥ शिष्य० ॥ १० ॥ कुलवर्द्धन नामज
दीधुं जी ॥ शि० ॥ जाणे कारज माहरुं सीधुं जी ॥
शि० ॥ माथे नवरंगी टोपी जी ॥ शि० ॥ जरफाग फि
रंगी ज्यो जी ॥ शिष्य० ॥ ११ ॥ आंगलां दरीयाइ दी

से जी ॥ शि० ॥ माय बाप तणां मन हीसे जी ॥ शि०
 ॥ हाथ पगे सोनानी कमली जी ॥ शि० ॥ अणिआ-
 ली आंखडली जी ॥ शिष्य० ॥ ११ ॥ काने मोतीनी
 लालडी सोहे जी ॥ शि० ॥ केडे कंदोरो मन मोहे जी
 ॥ शि० ॥ पगे राती पगरखी घाले जी ॥ शि० ॥ उमकं
 तो आंगण चाले जी ॥ शिष्य० ॥ १२ ॥ जेम रूप नंदन
 नुं निरखे जी ॥ शि० ॥ तेम हियडामां घणुं हरखे जी
 ॥ शि० ॥ मुज जाग्यदशा सपराणी जी ॥ शि० ॥ पुत्र
 बोले मधुरी वाणी जी ॥ शिष्य० ॥ १४ ॥ पांच वरस
 लगे लाले पाले जी ॥ शि० ॥ पठी जणवा मेढयो नि-
 शाले जी ॥ शि० ॥ आपे निशालीयाने खडीया जी ॥
 शि० ॥ रूपा सोनाना ते घडीया जी ॥ शिष्य० ॥ १५ ॥
 वतरणां विणा जवफूली जी ॥ शि० ॥ आपे सुखडली बहु
 मूली जी ॥ शि० ॥ खीरोदक शणियां चकमा जी ॥
 शि० ॥ पांमरी पीतांबर थकमां जी ॥ शिष्य० ॥ १६ ॥
 पंक्तिने बहु धन आपे जी ॥ शि० ॥ जाणे कीर्त्ति मा-
 हारी व्यापे जी ॥ शि० ॥ जणी गणने थयो ते पोढो
 जी ॥ शि० ॥ सहु कहे पिताथी दोढो जी ॥ शिष्य०
 ॥ १७ ॥ माता पण वचन न लोपे जी ॥ शि० ॥ कुव-
 चन कहे तोही न कोपे जी ॥ शि० ॥ एम प्रीति देखा

ढो पूरो जो ॥ शि० ॥ जो थापण होवे अधूरी जी ॥
शिष्य० ॥ १७ ॥ रोग उपजे तेहने अंगे जी ॥ शि० ॥
वात पित्त प्रबन्न कफ संगे जी ॥ शि० ॥ तव वैद्य तेडे
ससु काजे जी ॥ शि० ॥ धन नहिं तो काढो व्याजे जी
॥ शिष्य० ॥ १८ ॥ चूआ धूणे ने कहे चूतो जी ॥ शि०
॥ ऊजणी नाखी अबधूतो जी ॥ शि० ॥ दोरा मंत्री ब
हुजा बांधे जी ॥ शि० ॥ आयु त्रूटुं कोइ न सांधे जी ॥
शि० ॥ १९ ॥ आपे वली गोली काथ जी ॥ शि० ॥ करे
कारज सवलां साथ जी ॥ शि० ॥ निज थापण सघली
लेइ जी ॥ शि० ॥ सुत पोहोचे परजव तेइ जी ॥ शि०
॥ २० ॥ नंदन तुं प्राण आधार जी ॥ शि० ॥ कांइ मे-
ली गयो निरधार जी ॥ शि० ॥ एम करे अनेक विला
प जी ॥ शि० ॥ उदय आव्यां जे कीधां पाप जी ॥ शि०
॥ २१ ॥ ढाल बीजी पूरी कीधी जी ॥ शि० ॥ राग सो
रठमांहे सीधी जी ॥ शि० ॥ एहवी करणी जे टाले जी
॥ शि० ॥ वीर पापपंक पखाले जी ॥ शि० ॥ २२ ॥ ४७ ॥

॥ दोह्य ॥

॥ ऋण संबंधे ऊपजे, पुत्र कुपुत्र कुमित्र ॥ पशु वेदि
म जाई वहू, मात पिता कुंकलत्र ॥ १ ॥ माथे रण कोइ

(८)

मत करो, रण जूनु नवि थाय ॥ परजव जीव जाये ति
हां, रण जाणो दुःखदाय ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ देशी जुंखडानी ॥

॥ रखे कोइ रण करो ॥ ए आंकणी ॥ सुणजो हवे
आदरी करी रे, रणिया सुतनी वात ॥ रखे कोइ रण
करो ॥ जे दिनथी ते ऊपजे, ते दिनथी तिरजात ॥ र-
खेण ॥ १ ॥ कोइ गुण माने नहिं, बोले नितुरी वाण ॥
रखेण ॥ मीतुंमीतुं सवि जखे रे, कोइ न माने आण ॥
रखेण ॥ २ ॥ वस्तु जखी जे घरे होवे रे, ते चोरी करी
खेय ॥ रखेण ॥ जो वारे माता पिता रे, तो गाली तसु
देय ॥ रखेण ॥ ३ ॥ राठ पीठ जे घर तणां रे, वेची खाये
सोइ ॥ रखेण ॥ जांजे हांफलां कुंमलां रे, जो तेहने कहे
कोइ ॥ रखेण ॥ ४ ॥ ए बालक कोइ नवि लहे रे, करशे
घर तणां काम ॥ रखेण ॥ मा बाप तेहनां इम कहे रे,
मोहोटो थाशे जाम ॥ रखेण ॥ ५ ॥ शोल वरसनो जब
थयो रे, परणाव्यो मन रंग ॥ रखेण ॥ विवाहे धन खर-
ची घणुं रे, वहूअर आणी चंग ॥ रखेण ॥ ६ ॥ मास
एक परण्या थयो रे, मांझी तव वढवाड ॥ रखेण ॥ सासु
ससरी एम कहे रे, थावी नडी कुहाड ॥ रखेण ॥ ७ ॥

(९)

जंजेख्यो जरतारने रे, सासु चूकी रांरु ॥ रखे० ॥ खांरुं
पीसुं जल वहुं रे, मुजने जामे जारु ॥ रखे० ॥ ७ ॥ ना-
रायण वश नारीने रे, माणसनुं शुं ज्ञान ॥ रखे० ॥ अं-
तसमय सहु एम कहे रे, नारीनां जूठ प्राण ॥ रखे० ॥
९ ॥ वयण सुणी नारी तणां रे, कोप्यो ते परचंरु ॥ र-
खे० ॥ हणवा ऊठे माय तायने रे, लेई मूशल दंरु ॥
रखे० ॥ १० ॥ माल मंदिर ए माहारां रे, एहमां नथी
तुम लाग ॥ रखे० ॥ जाली जंटीयां मा बापनां रे, काढे
ते निर्जाग ॥ रखे० ॥ ११ ॥ एम दुःख देइ तेहने रे,
पामे मरण अकाल ॥ रखे० ॥ मुह आगल मूकी जाय
रे, विधवा वहूनुं शाल ॥ रखे० ॥ १२ ॥ पेहरी उठी न-
वि शके रे, कांइ न सूजे काम ॥ रखे० ॥ खेणिआयत
जो आवशे रे, किहांथी देशुं दाम ॥ रखे० ॥ १३ ॥ शं
कातो निशि दिन रहे रे, ऊठी जाये परदेश ॥ रखे० ॥
घरनी नारी दुःख सहे रे, बाली जोवन वेश ॥ रखे० ॥
१४ ॥ इह जव परजव रण तणां रे, जाणी दूषण टाल
॥ रखे० ॥ वीरमुनि त्रीजी कहे रे, जुंबखडानी ढाल ॥
रखे० ॥ १५ ॥ स० ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हसे रमे मीतुं चवे, मोहे मन माय ताय ॥ पेरी

सुत ते जाणीये, बाल पणे मरी जाय ॥ १ ॥ वली ऊ-
पजे वलि वलि मरे, गर्जे आव्यो सोय ॥ नाश करे धन
धान्यनो, एम दुःखदायी होय ॥ २ ॥ जो कदाच म-
होटी थयो, घणो करे हेराण ॥ विष प्रयोग शस्त्रे हरे,
मात पितानां प्राण ॥ ३ ॥ सुख दुःख कांई नवि करे,
नवि आपे नवि लेय ॥ रूसे तूसे जे नही, उदासीन
गणो तेय ॥ ४ ॥ जात मात जे प्रिय करे, क्रोडा करतो
रंग ॥ यौवन वय जे सुख दिये, नक्ति तणे परसंग ॥
५ ॥ संतोषे माय बापने, मीठे वचने जेह ॥ कथन क-
दा लोपे नहिं, सुत, ए पंचम ज्ञेय ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ नेमिराय तुं धन्य धन्य अणगार ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो कालां कालां जामठां, लाला सघले मीले
रे थाय ॥ जीहो पूठे जंबु सुधर्मने, लाला कुण कर्मे क-
हेवाय ॥ कृपानिधि मुजने जांखो तेह ॥ जेम जांगे मन
संदेह ॥ कृपाण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो सर्व दिव-
स मुनिने हणे, लाला सतीने करे संताप ॥ जीहो तेणे
पापे करी ऊपजे, लाला कोढ रोगनो व्याप ॥ कृपाण ॥
२ ॥ जीहो केणे कर्मे मुख वासना, लाला दुर्गंध होय
व्याप ॥ जीहो वंकवदन वली आंगुलि, लाला जे

द्विये मुनिने गाल ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ जीहो रातुं अंग रो
 म उज्ज्वलां, लाला पांपण जेहनी श्वेत ॥ जीहो पिंगल
 नर ते ज्ञांखिया, लाला कवण कर्मनो हेत ॥ कृपा० ॥ ४
 ॥ जीहो चैत्य सूरज सन्मुख सदा, लाला जे करे लघु
 वड नीत ॥ जीहो तेणे पापे करी प्राणीया, लाला पिं-
 गला धरजो चित ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ जीहो धोलो पीलो
 रातलो, लाला नानाविध परमेह ॥ जीहो करणी तेह-
 नी कोण लहे, लाला धातु हीण होय देह ॥ कृपा० ॥
 ६ ॥ जीहो सूत्र रजत कंचन त्रंबु, लाला हीरा विद्रुम
 जेह ॥ जीहो धातु सकल चोरी ग्रहे, लाला बहु मूत्रता
 निःसंदेह ॥ कृपा० ॥ ७ ॥ जीहो सूकर कूकर गर्दजा,
 लाला कूकड महिष मांजार ॥ जीहो काक उलूक अ-
 हि वृश्चिका, लाला कहो कोण पाप प्रकार ॥ कृपा० ॥
 ८ ॥ जीहो दान दया तप व्रत नहीं, लाला यात्र न पर
 उपकार ॥ जीहो रात्रिचोजन जे करे, लाला तेहथी ए
 अवतार ॥ कृपा० ॥ ९ ॥ जीहो चंरु कुशीला कर्कशा,
 लाला कलह करे दिन रात ॥ जीहो रूप कुरूप काली
 घणुं, लाला जेशलंकी सुविख्यात ॥ कृपा० ॥ १० ॥ जीहो
 धूकखर खरगामिनी, लाला माथे बाबरवाल ॥ जीहो
 क्रोधमुखी बडबड करे, लाला दांत जिस्वा कोदमि ॥

कृपा० ॥ ११ ॥ जीहो चाटु पाटु पाउले, लाला पतिनै
करे प्रहार ॥ जीहो एहवी नारी जेहने, लाला कवण
कर्म अधिकार ॥ कृपा० ॥ १३ ॥ जीहो नणंद देराणी
जेठाणीयां, लाला सासू ससरो जेठ ॥ जीहो वडसासू
देवर वडू, लाला कर्म करे नहिं वेठ ॥ कृपा० ॥ १३ ॥
जीहो जे जिनवर पूजे नहि, लाला करे आशातन शूल
॥ जीहो निंदे जनने जे सदा, लाला जाणे ए पापनुं मू-
ल ॥ कृपा० ॥ १४ ॥ जीहो पांच सात पुत्री हुवे, लाला
पुत्र तणुं नहिं नाम ॥ जीहो तेहतणां परकाशिये, ला-
ला पूरव चवनां काम ॥ कृपा० ॥ १५ ॥ जीहो आहेडी
जवे जंगले, लाला रोके जलनां ठाम ॥ जीहो कूप न-
दी ड्रह वावडी, लाला पशु पंखी आवे जाम ॥ कृपा०
॥ १६ ॥ जीहो ऊनाले अति आकरो, लाला तडके दा-
जे रे देह ॥ जीहो तरस्यां ते पाठां वले, लाला पाप घ-
णुं तसु होय ॥ कृपा० ॥ १७ ॥ जीहो आरंज्युं निःफल
होये, लाला सीजे नहिं कोइ काल ॥ जीहो विघन घ-
णां होय तेहने, लाला कोण कर्म महाराज ॥ कृपा० ॥
१७ ॥ जीहो मात पिताने पीडवे, लाला माने नही गुरु
आण ॥ जीहो कारज गुरुनुं नवि करे, लाला तेहनुं एह
निदान ॥ कृपा० ॥ १९ ॥ जीहो अणजाण्यो जय ऊप-

(१३)

जे, लाला सूतां बेठां रे आब ॥ जीहो अणदीतुं दीतुं
कहे, लांला तसु फल मन संजाव ॥ कृपा० ॥ १० ॥ जी
हो ए उपदेश सोहामणो, लाला सांजलि टालो रे दो-
ष ॥ जीहो चोथी ढाल पूरी थइ, लाला वीर कहे पुण्य
पोष ॥ कृपा० ॥ ११ ॥ ए७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार पांच पुत्री हुवे, ते सघली रंकाय ॥ पूरव
जव तिण प्राणीये, कीधा कोण अन्याय ॥ १ ॥ चैत्य
कूप सर वावनां, करे विघन धन खाय ॥ ग्रामादिक बा
ले बली, जनमांतर नर हाय ॥ २ ॥ मंद वाय पीडा क
रे, पाप तेहनां जांख ॥ मद्य मांस जे नर जखे, मरणांत
फल अजिलाख ॥ ३ ॥ काने कांइ न सांजले, कोण क-
त्यां कुकर्म ॥ कहो पूज्य! जंबू जणे, वलतुं कहे सुधर्म
॥ ४ ॥ साधु वचन नवि सांजले, सुणे नहीं सिद्धांत ॥
अणसांजद्वयुं कहे सांजद्वयुं, बहेरो थाय इम ज्ञांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ पुण्य प्रशंसिये ॥ ए देशी ॥

॥ वात गुद्धम होये जेहने रे, पेटे थाये रे पीड ॥
साधुं धान्य जरे नहीं रे, कवण कर्मनी जीड रे ॥ ६ ॥

कर्मकथा कहो ॥ ए आंकणी ॥ गणधर गुण चंकार रे
 ॥ कर्म० ॥ अमृत वाणी वरसता रे, जगजीवन हितका
 र रे ॥ कर्म० ॥ २ ॥ कोह्यो विणठो जे होय रे, कोइ न
 वांठे जास ॥ ते वहोरावे साधुने रे, ए फल जाणो तास
 रे ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ खयन व्याधि तस ऊपजे रे, रोग स
 हुनो रे वास ॥ रात दिवस खूं खूं करे रे, कफ तणो
 आवास रे ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ हाड तणो विक्रय करे रे, जे
 वली विष व्यापार ॥ मधु पाडे वनमां जइ रे, ह्यरोगी
 गी निर्धार रे ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ जन्मथकी जे आंधलो रे,
 परुल प्रवालां ठाय ॥ नेत्र रोगी बहुजातिना रे, कवण
 कर्म अंतराय रे ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ परस्त्री निरखे रागशुं रे,
 परनारीशुं प्रीत ॥ काज विणासे पारकुं रे, आंख तणी
 ए रीत रे ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ आधाशीशी अति घणुं रे, मा
 थे पीड करंत ॥ ऊंचुं जोइ नवि शके रे, कोण अशुच
 आचरंत रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ अग्नि साखे आदरे रे, श्या-
 मा आयत कीन ॥ चित्त ताहरुं ने माहरुं रे, जिन ग-
 णवा लयलीन रे ॥ कर्म० ॥ ९ ॥ परणी नारी परहरी
 रे, पररमणीशुं रंग ॥ घरनावे जे आपणे रे, तिण शिर
 सुख प्रसंग रे ॥ कर्म० ॥ १० ॥ सूयर सरखुं जेइने रे,
 सुखुं होये अनिट ॥ तेणे श्यां पाप समाचख्यां रे, ते

(१५)

चांखो मुक्त इष्ट रे ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ एक नर दान बहु
विध दिये रे, आपे जलट आणि ॥ निंदे तेहने नित्य
प्रत्ये रे, जुंमुमुखो ते जाण रे ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ गर्जे शा
ल थई रहे रे, वधे नहिं जे बाल ॥ पूरव जव तेणे आद
स्यां रे, कवण कर्म विकराल रे ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ जात-
मात्र ते बालने रे, विवाहनी धरे शंक ॥ मारे पाडे ग-
र्जने रे, तेहने शाल निःशंक रे ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ स्थान-
त्रष्ट नर जे हुवे रे, पामे नहि किहां ठाम ॥ पापप्रकृति
कोण तेहने रे, ते संजलावो स्वाम रे ॥ कर्म० ॥ १५ ॥
मारग अथ जल थानके रे, वृद्ध महाफल चार ॥ पशु
पंखी पंथी जिहां रे, ल्ये विशराम अपार रे ॥ कर्म० ॥
१६ ॥ कापे एहवा वृद्धने रे, तेहने ठाम न होय ॥ जि
हां जाये तिहां दुःख सहे रे, बेसण न दिये कोय रे ॥
१७ ॥ कोढ रोग घट जेहने रे, धोलुं थाये गात्र ॥ मोहो
टा माणस जेहशुं रे, बोले नहीं कृणमात्र रे ॥ कर्म० ॥
१८ ॥ लोपे वृत्ति जे साधुनी रे, गोवध चोरी जूठ ॥ क-
न्या धन जे वावरे रे, कूलां कूंपण दुठ रे ॥ कर्म० ॥
१९ ॥ खूटे खांते ख्यालशुं रे, ते नर कोढी रे थाय ॥
कीधां कर्म न बूटीये रे ॥ जब तब दुःख दे आय रे ॥
कर्म० ॥ २० ॥ मात पिता नारी तणो रे, बेढा बेटी वि-

(१६)

योग ॥ जेहने आवी ऊपजे रे, कवण कर्मनो जोग रे ॥
कर्म० ॥ २१ ॥ गाय वत्स माय बापनो रे, पंखी पुत्र
विठोह ॥ पाडे पापी तेहने रे, मलवाने होये रोह रे ॥
कर्म० ॥ २२ ॥ सूत्रनी वाणी सांचली रे, टाखे दूषण
दूर ॥ वीर कहे ढाल पांचमी रे, पामे सुख जरपूर रे ॥
कर्म० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नंदन अथवा नंदिनी, जन्म पामे माय बाप ॥
मरण धर्म पामे तुरत, कवण कर्म संताप ॥ १ ॥ शरणे
आव्या जीवने, जे शरणुं नवि थाय ॥ परजव तेहना
पापथी, शरण विना सीदाय ॥ २ ॥ जलोदरे करी जे
दुःखी, पेट न होवे नर्म ॥ तेणे संच्या कोण पाठले, ज
वमां अधिक अधर्म ॥ ३ ॥ जाति पांति गणे नहिं, खा-
ये जह अजह ॥ विरति नहिं कोइ वस्तुनी, जलोदर
थाये प्रत्यह ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥

॥ कंठनाल रुंमाल जे, दांते जीजे दुःख रे ॥ सो-
हम स्वामी कहो ॥ लंब होठ होय बोंबडो, पाके जेहनुं
मुख रे ॥ सो० ॥ १ ॥ अकारज कीधां किस्यां, पूरव ज

व तेणे जीव रे ॥ सो० ॥ मुखरोगे करी मानवी, पाडे
 घणी घणी रीव रे ॥ सो० ॥ १ ॥ गांठ ठोडे जे पारकी,
 धूतावी लीये माल रे ॥ सो० ॥ कंठमाला होय तेहने,
 गरुजाल रुंमाल रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ स्वाद करे जे नव
 नवा, खावानो होय वाढ रे ॥ सो० ॥ आठम पाखी
 नवि गणे, दूःखे दांत जीज दाढ रे ॥ सो० ॥ ४ ॥
 जिव्हा वश राखे नहिं, बोले बहुलां कूड रे ॥ सो० ॥
 संयम सहित सूधा यति, कूरु करे तस मूढ रे ॥ सो० ॥
 ॥ ५ ॥ ते परजव थाये बोबडो, होये वली मुखना रोग
 रे ॥ सो० ॥ आप कमाइ दुःख सहे, बूटे न कर्मना जो
 ग रे ॥ सो० ॥ ६ ॥ श्रवण वहे जेहना सदा, रुधिर पर
 निकसंत रे ॥ सो० ॥ कामे नाखे जाटका, कवण कर्म
 विकसंत रे ॥ सो० ॥ ७ ॥ जांरु जवाई सांजले, चाडि
 चुगलनी घात रे ॥ सो० ॥ आदर करी आदरे, कान
 तणी ए वात रे ॥ सो० ॥ ८ ॥ दीर्घदंत मुख नीकले,
 दीसे घणुं विरूप रे ॥ सो० ॥ पर अपवाद घर घर करे,
 ए तसु कर्म स्वरूप रे ॥ सो० ॥ ९ ॥ पगरहित होये पां
 गलो, पगळुं एक न खसाय रे ॥ सो० ॥ पूरव जवनुं तेह
 ने, कवण कर्म दुःखदाय रे ॥ सो० ॥ १० ॥ पग चांगी
 वाहे पशु, दया रहित रखडंत रे ॥ सो० ॥ आंबली वड

आंबली, कोपे कुमति पडंत रे ॥ सो० ॥ ११ ॥ श्वेतार
 कादिक औषधि, काढे तेहनी जडंत रे ॥ सो० ॥ पाप
 उदय जब आवियां, लूलो पंगु लोमंत रे ॥ सो० ॥ १२
 ॥ मूत्र कृच्छ्र करी महा दुःखी, पथरी रोग प्रचंरु रे ॥
 सो० ॥ अंतर्गल शोफो होय, कवण कर्मनो दंरु रे ॥
 सो० ॥ १३ ॥ जे राजानी रमणीशुं, सेवे विषयनां सुख
 रे ॥ सो० ॥ मूत्र कृच्छ्रनुं तेहने, परजव थाये दुःख रे ॥
 सो० ॥ १४ ॥ प्रेम करी परनारीशुं, काम राग विखसंत
 रे ॥ सो० ॥ परदाराना पापथी, पथरी प्रबल दमंत रे
 ॥ सो० ॥ १५ ॥ गुरुणीशुं रंगे रमे, कामविषयना राग रे
 ॥ सो० ॥ अंतर्गल होय तेहने, किहां न लहे सोजाग
 रें ॥ सो० ॥ १६ ॥ महिला मित्रनी जोगवे, वारे तेहशुं
 वढंत रे ॥ सो० ॥ नवि बीये अपवादथी, शोफो तास
 चढंत रे ॥ सो० ॥ १७ ॥ दीसंतो अति फूटरो, बोली न
 शके बोल रे ॥ सो० ॥ मूंगो गूंगो मूलथी, कवण कर्म-
 नो रोख रे ॥ सो० ॥ १८ ॥ अनिर्वचन गुरुने कहे, महो
 टानुं हरे मान रे ॥ सो० ॥ कूडी साख तिहां दीये, गूं-
 गो इणे अजिमान रे ॥ सो० ॥ १९ ॥ ए दूषण जे टाल
 शे, सांजली ए उपदेश रे ॥ सो० ॥ ढाल ठठी कहे बी-
 रजी, दूषण नहि खवखेश रे ॥ सो० ॥ २० ॥

(१९)

॥ दोहा ॥

॥ शूल व्याधि जे नर लहे, काबी जमणी कूख ॥
श्रौषध को माने नहि ॥ कवण कर्मनुं दुःख ॥ १ ॥ प-
शु पंखी मानव प्रते, बेठां बाण हणंत ॥ शूलरोग तस
ऊपजे, सोहम एम जणंत ॥ २ ॥ कारण चार विना म
रे, जे नरनां संतान ॥ तेह तणां गुरुजी कहो, कवण क
र्म विन्नाण ॥ ३ ॥ सूरजने सन्मुख थई, देवालयमां जा
य ॥ ड्रव्य लोच मनसा धरी, साधु तणा सम खाय ॥
४ ॥ सम खातो शंके नहि, ऋषि माथे कर देय ॥ मृषा
सम कीधाथकी, संतति नाश करेय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ हांसलानी ॥ ऋषज्जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ तुंठा जे होय मानवी, बेहु हाथे हो न कराये
काज के ॥ पूज्यजी कहे कवियण सुणो ॥ ए आंकणी
॥ जव पहेलो जे चांखिये, तेहने होय हो जे कर्मनो
साज के ॥ पूज्य० ॥ १ ॥ सुधर्मा बलतुं एम कहे, सुण
जंबू हो तसु कर्मनी साख के ॥ रसीयो पाप तणे रसे,
जे ठेदे हो पंखीनी पांख के ॥ पूज्य० ॥ २ ॥ मात पिता
गुरु साधुने, निज हाथे हो ताडना करे तिस्क के ॥ पर
जव करम उदय होय, कर्म पांखे हो मागे ते जीख के ॥

(१०)

पूज्य० ॥ ३ ॥ अंगजंग हुवे जेहने, उठीने हो बेठानी
न आय के ॥ पाप जनम पूरव तणां, मुज तेहनां हो
सुणवा उजमाय के ॥ पूज्य० ॥ ४ ॥ चैत्यजंग करे चाहि
ने, अधमाधम हो करे प्रतिमा जंग के ॥ तेणै कर्म करी
पामियो, परजव नर हो थाये अंग जंग के ॥ पूज्य० ॥
॥ ५ ॥ वड बोर लींबु जेवडा, मसा मोहोढे हो होये
आखे नील के ॥ रसोली गोटी वडी, वदने वखी हो
थाये आखे खील के ॥ पूज्य० ॥ ६ ॥ करणि कोण ते
आदरी, ते दाखो हो गुरुजी गुणखाण के ॥ गाढे घाये
ढोरने, खर श्वानने हो मारे पाषाण के ॥ पूज्य० ॥ ७ ॥
गड गुंबड न टले कदा, कान हेठल हो थाये करणक
मूल के ॥ गुति अरुज चांदी होये, कोण तेहने हो क-
रम प्रतिकूल के ॥ पूज्य० ॥ ८ ॥ बाडी अति रलीयाम
णी, देखीने हो हरखे सहु लोक के ॥ चोरे फल फूल
तेहनां, गुंबडानो हो पामे ते शोक के ॥ पूज्य० ॥ ९ ॥
पम फाटी थाये चीरीयां, खस लूखस हो अंगे थाये
दाड्र के ॥ उपचारे उरसे नहीं, दुःख देखे हो कोण
करम प्रसाद के ॥ पूज्य० ॥ १० ॥ मासे पहे ऊपजे,
उसासे हो वरसे बहु रोग के ॥ सांस खास कफ फूट-
णी, कये खुःखे हो एम होवे मोग के ॥ पूज्य० ॥ ११ ॥

(११)

साप सरीटी सापणी, वींठी वींठण हो मारे पुण्यहेत
के ॥ गोह ठुंदरीने हणे, तेणे करणी हो मुख तस
फल हेत के ॥ पूज्य० ॥ १२ ॥ मंदवाड थाये चीकणी,
घरमांहे हो थोडी होये तोण के ॥ जनमांतर तेणे पा-
पीये, पाप संच्यां हो जगवन् कहो कोण के ॥ पूज्य०
॥ १३ ॥ धर्मतणे थानकथकी, साज लेइ हो सहु झूषण
लेह के ॥ जीवदया पाले नहिं, व्याधि सघलो हो व्यापे
तस देह के ॥ पूज्य० ॥ १४ ॥ हितउपदेश हियावटे,
सांजलीने हो सहु झूषण टाल के ॥ पुण्यवशे प्राणी घणो,
सांजलजो हो सहु सातमी ढाल के ॥ पूज्य० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पीनस रोग पीडा करे, शोषित नाक स्वत ॥
वांकी बेसे नासिका, कीटक प्राणी दमंत ॥ १ ॥ केहे-
वां कर्म कल्यां तेणे, पूरवले जवे स्वाम ॥ जविक जीव
तुमे सांजली, करो न एहवां काम ॥ २ ॥ चलीमार
जवे चरकलां, पापी जे मारंत ॥ मोर चकोर कोकिल
सुश्रा, पीनस तेणे धरंत ॥ ३ ॥ यक्ष राक्षस ने किंपुरुष,
जूत प्रेत गंधर्व ॥ पिशाच महोरग किन्नरा, ए कोण क-
र्मै सर्व ॥ ४ ॥ जलमांहे बूडी मरे, परवत चडी पडंत ॥
अग्नि सर्प विष शस्त्र मृत, व्यंतर ए सवि हुंत ॥ ५ ॥

(१२)

॥ ढाल आठमी ॥

॥ मनमोहन लाल ॥ ए देशी ॥

॥ कुत्सित रूप बीहामणुं ॥ कहो केवली लाल ॥
माथुं महोटुं ठीब रे ॥ कहो केवली लाल ॥ कपिल के-
श आंख चीपडी ॥ कहो ॥ वचनकटुक जिम नींब रे
॥ कहो ॥ १ ॥ नाक बेतुं कान सूपडां ॥ कहो ॥ लां
बा होठ हलकंत रे ॥ कहो ॥ श्याम वदन दंत वंकडा
॥ कहो ॥ खर जेम त्राडुकंत रे ॥ कहो ॥ २ ॥ केहने
दीतुं नवि गमे ॥ कहो ॥ गर्दन मुह जाणे पूठ रे ॥ क
हो ॥ महिष कंध मातो घणो ॥ कहो ॥ सूरवाल दा
ढी मूठ रे ॥ कहो ॥ ३ ॥ कुंण करम कीधां तेणे ॥ क
हो ॥ जेहथी एहवुं कुरूप रे ॥ कहो ॥ उपकारी सो
हम कहे ॥ कहो ॥ तेहनं सर्व सरूप रे ॥ कहो ॥ ४
॥ पंथ महाव्रत सूधां धरे ॥ कहो ॥ सौम्यवदन सुक
माल रे ॥ सुणो धारणी नंद ॥ करे रहा ठकायनी ॥
सुणो ॥ जेम पाले माय बाल रे ॥ सु ॥ ५ ॥ ममता
माया नवि करे ॥ सुणो ॥ टाले दूषण बायाल रे ॥
सु ॥ चारित्र्यी नुके नहि रे ॥ सु ॥ परिसह देखी
त्रयस रे ॥ सु ॥ ६ ॥ उनाले ले आतापना रे ॥ सु ॥

॥ शीयाले सहे शीत रे ॥ सु० ॥ कांस मसानां दुःख स
हे ॥ सु० ॥ शत्रु मित्र समचित्त रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ मुनि
वर समता रस जस्यो ॥ सु० ॥ कांचन उपल समान रे
॥ सु० ॥ दुक्कर तप संजम धरे ॥ सु० ॥ न करे तासु
निदान रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ हसे थुंके हेला करे रे ॥ सु० ॥
मञ्जमलीन तनु देख रे ॥ सु० ॥ ए दुर्गंध दोजागीया
॥ सु० ॥ करे घणो विद्वेष रे ॥ सु० ॥ ए ॥ रूप मदे मो
ह्यो थको रे ॥ सु० ॥ धर्मबुद्धि उवेख रे ॥ सु० ॥ कर्म
उदय सब ते हुवे ॥ सु० ॥ आय कुरूप विशेष रे ॥ सु०
॥ १० ॥ आदरशुं ढाल आठमी ॥ सु० ॥ सुणतां होय
आणंद रे ॥ सु० ॥ देवचंद वाचक तणो ॥ सु० ॥ शि-
ष्य कहे वीरचंद रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ दुःखे आंख रहि रहि, तेहनुं कहो कुण पाप ॥
परगुण देखी नवि शके, तेहथी आंख अदाप ॥ १ ॥
शिर कर कंपे जेहना, गात्रे थाय प्रखेद ॥ अंग सघलां
शूनां होये, कवण कर्म संवेद ॥ २ ॥ मारगमांहे हींरु-
तां, शस्त्र हाथमां होय ॥ वाहे जिहां तिहां काम विण,
कंपरोग तेणे जोय ॥३॥ पहाघात पराजवे, कवण कर
संयोग ॥ हाथे स्त्री हत्या करे, अर्ध अंग हुवे रोग ॥४॥

॥ ढाल नवमी ॥

नदी जमुनाके तीर, उके दोय पंखियां ॥ ए देशी ॥

॥ व्रण वाहे नासूर, क्रूर मुख मीलमे ॥ पवित्रपणुं
नहीं होय, रहे कुचीलमे ॥ कवण कर्म तेणे कीध, सि-
द्ध नहीं श्रौषधे ॥ गिरुआ गुणह निधान, कहो करुणा
बुद्धे ॥ १ ॥ कान नाक विंधीने, परोइ दोस्टां ॥ कौत
क कारणे कान, कापे कठोरडां ॥ पशु पंखी प्रत्ये एम,
पीडे जे पापीया ॥ नासुरे करी तेह, होय संतापीया ॥
२ ॥ रक्त पित्तनो रोग, लहे जे जीवडा ॥ गले अंग उ
पांग, पडे मांहे जीवडा ॥ जवांतरे तेणे पाप, कीधां प्रचु
केहवां ॥ मनुष्य तणो जव पामी, पामे दुःख एहवां ॥
३ ॥ महिष महिषी ने ठाग, ठागी ने बलदीया ॥ फासुं
घाली तास, गले मारे पापिया ॥ मरी नरकमांहे जाय,
महा अहमी दले ॥ करे खंको खंरु, पारानी परे मीले
॥ ४ ॥ जो कदाच वलि ते, मनुष्यमांहि अवतरे ॥ पा
मे बहुलां दुःख, गलित कोडे मरे ॥ हरस रोगे करी
जेह, आतुर होये आतमा ॥ पाप तेहनां कोण, कहो
पुण्यातमा ॥ ५ ॥ फोडे सरोवर पाल, नदी उह शोष-
वे ॥ जलविण सहु जल जंतु, घणा दुःखीया होवे ॥
तेह कर्मने पाप, पीडा होवे हरसनी ॥ चित्ते दया न-

(३५)

वि कीध, थावर ने त्रसनी ॥ ६ ॥ कुटुंब तणी होये हा
ण, के जेहने सरवथा ॥ तेह तणां जे पाप, कहो जे हो
ये यथा ॥ माठीने जत्रे आवी, मारे जे माठलां ॥ तणे
कुटुंबनो नाश, जाणो कृत पाठलां ॥ ७ ॥ राते नवि
दीसंत, दीहे आंख निर्मली ॥ रातअंधो केणे पाप,
कहो मुज केवली ॥ अरुणोदय मध्यान्ह, संध्याये जे
जमे ॥ खाय पीये मध्य रात्रि, रात्यंधो तसु दमे ॥ ८ ॥
रांघण वायनी पीड, हाथे पगे आकरी ॥ कीधां कहेवां
कर्म, कहो करुणा करी ॥ घोडा घोडी उंट, फेरे जे दु
र्मति ॥ रांघण तेहने पाप, जाणो होये ठती ॥ ९ ॥
वली जगंदरनो व्याधि, राध निकले घणी ॥ असुख
आठे पोहोर, थाय जे रेवणी ॥ फोडे कूकड इंरु, पीये
रस रसे करी ॥ तेह पापने रोग, होये जगंदरी ॥ १० ॥
एहवुं जाणी प्राणी, जे दूषण टालशे ॥ श्रीजिनवरनी
आण, सूधी जे पालशे ॥ ते लेहेशे शिवसुख, दुःख न-
हिं ले कदा ॥ नवमी ढाले वीर, लहे सुखसंपदा ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बेठां फिरतां बोधतां, जिहां तिहां अंतराख ॥
बाइ आवे दुःख दीये, कवण कर्मनी चाल ॥ १ ॥ जइ
शिकारे जीवने, मारे विण अपराध ॥ तेह कर्म उदये

हुये, तव मरगीनी व्याध ॥ १ ॥ खंधे चारटले नहि, क
रणी केही कीध ॥ स्वामी अर्थ साधे नहिं, आप स्वार्थ
मे लीध ॥ ३ ॥ माढी मूठ होये नहिं, पांपणना जाये
वाल ॥ मारे जे चाशेजने, हणे कन्यानो बाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ हाड गंजीर हिया होडी रे, मोहोटा रोग कहा-
य ॥ जेहने आवी ऊपजे रे, कवण कर्म सहाय ॥ सो-
जागी सोहम, जाखो कर्मनी वात ॥ जे केवली विण
न कहात ॥ सोजागी सोहम ॥ जा० ॥ १ ॥ ए आंक-
णी ॥ बालक परनां खेइने रे, वेचे परदेशे जाय ॥ महि
माइना मोहथी रे, हारु गंजीर तस थाय ॥ सो० ॥ २
॥ जा० ॥ धन पाम्युं थिर नवि रहे रे, जिहां तिहांथी
जाय ॥ जन्मांतरना तेहना रे, कवण कर्म उपाय ॥ सो०
॥ ३ ॥ जा० ॥ संन्यासी योगी जती रे, अथवा लिंगी
कोय ॥ ड्रव्य संचयां खाये गृही रे, पामे धन नही सो
य ॥ सो० ॥ ४ ॥ जा० ॥ जो कदाच धन संपजे रे, अ
सि चोर अन्याय ॥ नृप सबसुं लूटी लीये रे, अंते खेरु
थाय ॥ सो० ॥ ५ ॥ जा० ॥ अतिसार होये जेहने रे,

(३७)

थाये छोही ठाण ॥ नाखे मलमूत्र आगमां रे, ए
तसु कर्म निदान ॥ सो० ॥ ६ ॥ जा० ॥ जे थाये नर
कूबडो रे, हींमे बेवड होय ॥ कोण कर्म कीधां ते
णे रे, जगवन् जांखो सोय ॥ सो० ॥ ७ ॥ जा० ॥
उंट बलद जेंसा ठालकां रे, घाठां तेहनां चर्म ॥ लोजे
जार घणा जख्या रे, कीधां एह कुकर्म ॥ सो० ॥ ८ ॥
॥ जा० ॥ नपुंसकपणुं जे लहे रे, कोण करणी करी
हीन ॥ पुरुष नहि नारी नहि रे, माणसमांहे दी
न ॥ सो० ॥ ९ ॥ जा० ॥ माणस घोटक ढोरने रे,
समारे सुख काम ॥ कुमति गलकंबल ठेदने रे, वेद
नपुंसक पाम ॥ सो० ॥ १० ॥ जा० ॥ नरके जाये
जीवडा रे, पामे बहुलां दुःख ॥ अनंत शीत ताप वेद
ना रे, अनंती सहे तृष जूख ॥ सो० ॥ ११ ॥ जा० ॥
तेणे जीवे कोण कीधला रे, कर्मना बंध कठोर ॥ सुर
वेदना खेत्रवेदना रे, जे पामे दुःख रोर ॥ सो० ॥ १२ ॥
जा० ॥ महारंज महामूर्खना रे, असत चोरी परदार ॥
पंचेंद्रियवध फल जखे रे, नरक लहे अवतार ॥ सो०
॥ १३ ॥ जा० ॥ दोष टाले जो एह्वारे, जत्रियण
हेहे आण ॥ दशमी ढाल पूरी थइ रे, वीर तणी ए
वाण ॥ सो० ॥ १४ ॥ जा० ॥

(१८)

॥ दोहा ॥

तिर्यंचमांहे ऊपजे, जीव लहे दुःख जोर ॥ तेणे
संच्यां पूरवे, केहां कर्म कठोर ॥ १ ॥ आप काजे
जी जी करे, परनें कामे अपूठ ॥ मननो पार न को
लहे, मुख मोतुं चित्त दुठ ॥ २ ॥ जे धूतारे लोकने,
हैये होय रोमांच ॥ कर्म करे जे एहवां, पूरव जव
तिर्यंच ॥ ३ ॥ पुरुष वेद तजी स्त्रीपणुं, कोण पापे
पामंत ॥ कूड कपट ठल चपलता, मायाये महिवा
हुंत ॥ ४ ॥ जोग न पामे ते रति, ठती वस्तु न खवा
य ॥ करे अंतराय आपे नहि, जोग रहित ते थाय ॥
॥ ५ ॥ रीशें धड हडतो मरे, मातो मान विशेष ॥
खोज खेहेरमां काल करी, कुगति करे प्रवेश ॥ ६ ॥

॥ ढात्र अगीयारमी ॥

॥ चरणाक्षी चामुंडा रण चढे ॥ ए देशी ॥

॥ बाघ सिंह क्रोधे होय, माने गर्दज श्वान रे ॥
नोल साप होय खोजथी, काणो केणे निदान रे ॥ १ ॥
प्रश्न उत्तर गुरुजी कहे, सांजलजो सहु कोय रे ॥
पांति जेदना पापथी, आंखे काणो होय रे ॥ प्रश्न० ॥
॥ २ ॥ अजगर केणे कर्मे होये, पेट घसंतो चाले रे
॥ विद्यामद अति घणो करे, कोश्ने अहार नाखे रे ॥

(१९)

प्रश्न० ॥ ३ ॥ जणे गुणे कहो गुण किश्यो, एम कही
वंदे प्राणी रे ॥ अजगरमांहे ऊपजे, मूरख मनुष्य
निशाणी रे ॥ प्रश्न० ॥ ४ ॥ रहे सदाये बीहतो, थोडे
घणे कडाके रे ॥ पशु पंखीने त्रासवे, बंधुक मेहेल्ली
जडाके रे ॥ प्रश्न० ॥ ५ ॥ पामे दास दासोपणुं, आ
दर न लहे रेख रे ॥ निचृंढे सहु तेहने, कवण कर्मना
लेख रे ॥ प्रश्न० ॥ ६ ॥ जाति मदे मातो फरे, विनय
नही तसु पास रे ॥ दानादिक पामे नही, हाड विक्र
यी थाय दास रे ॥ प्रश्न० ॥ ७ ॥ वाला जेहने नीकले,
एक बे त्रण चार पंच रे ॥ पामे वेदन अति घणी, क
वण कर्मनो संच रे ॥ प्रश्न० ॥ ८ ॥ अणगल्ल जल जे
वावरे, गल्ली संखारो नाखे रे ॥ गलतां टुंपो जे दीये,
ए वालानी साख रे ॥ प्रश्न० ॥ ९ ॥ नीच जातिमां
ऊपजे, कुण करणीथी तेह रे ॥ अनाचार रातो सदा,
निरख सरखमां रेह रे ॥ प्रश्न० ॥ १० ॥ कूडां तोल
कूडां मापले, अधिकुं लेइ उहुं आपे रे ॥ क्रियाहीन
कोइ नवी लहे, नीच जाति तेणे पपे रे ॥ प्रश्न० ॥ ११ ॥
॥ श्लोक ॥ यत्र यत्र क्रिया श्रेष्ठा, तत्र तत्र नरोत्तमाः ॥
यत्र यत्र क्रिया नास्ति, तत्र तत्र नराधमाः ॥ १ ॥ क्रि
या बलवती लोके, सर्व धर्मानुसारिणी ॥ श्रद्धा दया

(३०)

हामा लज्जा, शांतिमेधाप्रवर्द्धिनी ॥ १ ॥ क्रिया सत्सं
गतिः सिद्धिः, सेवा व्रतगतिर्धृतिः ॥ एता ल्त्रयोदशा
पत्या, धर्मस्य गृहचारिणः ॥ ३ ॥ ढाल ॥ ढाल सोहे
अग्यारमी, सांजलतां सुखदाय रे ॥ कारण पापतणां
तजे, वीर सुखी ते थाय रे ॥ प्रश्न० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए फल ज्ञाख्यां पापनां, हवे कहू पुण्य विपाक ॥
सुकृत संच्यां सुख होय, आंवे न थाये आक ॥ १ ॥
जीव लहे जव मनुष्यनो, किणे पुण्ये करी पूज्य ॥ सो
हम बोले शुज परे, जंबु एम तुं बूऊ ॥ २ ॥ सरस
चित्त सुकुमाल पणुं, नहिं मन क्रोध लगार ॥ जीव
तणी जयणा करे, न्याये वणिज व्यापार ॥ ३ ॥ सा
त खेत्र धन वावरे, पूजे जिनवर देव ॥ साधुतणी सेवा
करे, लहे नरजव ततखेव ॥ ४ ॥ नारी मरी नर नी
पजे, सुकृत कहिये तास ॥ सत्य शील संतोष दृढ,
विनय पुरुष विलास ॥ ५ ॥

॥ ढाल वारमी ॥

॥ दीग देव अनेक, हांजी दीग देव अनेक,

न कोइ मन बसे रे ॥ न कोइ ० ॥ ए देशी ॥

॥ स्वर्गे लहे सुख सार ॥ हांजी ० ॥ स ० ॥ अनु

पम सुरवरा रे ॥ अ० ॥ थइ थइ रंग रसात्र ॥ हां० ॥
नाचे बहु अपठरा रे ॥ ना० ॥ गर्ज नहीं सुख सेज
॥ हां० ॥ तिहां ऊपजे सदा रे ॥ ति० ॥ आणंदे सहु
देव ॥ हां० ॥ कहे जय जय तदा रे ॥ क० ॥ १ ॥
मन मान्यां करे रूप ॥ हां० ॥ स्वरूप विविध परे रे
॥ स्व० ॥ जरा न व्यापे वाल ॥ हां० ॥ के स्वेद नहिं
शिरे रे ॥ के० ॥ कहो स्वामी शे पुण्य ॥ हां० ॥ के कि
हां कीधां मुदा रे ॥ के कि० ॥ २ ॥ तजी घरना व्यापार
॥ हां० ॥ के पंचेंद्रिय दमे रे ॥ के पंचें० ॥ डुकर तप
बार जेद ॥ हां० ॥ सत्तर जेद संजमे रे ॥ स० ॥ चावे
जडक चित्त ॥ हां० ॥ आणा जिननी वहे रे ॥ आ० ॥
दान दया दाहिएय ॥ हां० ॥ अमर पदवी लहे रे ॥
अ० ॥ ३ ॥ नाना विधना जोग ॥ हां० ॥ जला जे जो
गवे रे ॥ ज० ॥ दुःख नहीं लव लेश ॥ हां० ॥ दीर्घ
आयु जोगवे रे ॥ दी० ॥ सोजागी शिरदार ॥ हां० ॥
सहु माने घणुं रे ॥ के स० ॥ जगगुरु जाखो तेह ॥
हां० ॥ कारण कोण पुण्यनुं रे ॥ का० ॥ ४ ॥ वस्त्र
पात्र अन्न पान ॥ हां० ॥ शय्या मुनिने दीये रे ॥ श० ॥
अजय दान दातार ॥ हां० ॥ जीवदया हीये रे ॥ के
जी० ॥ छोपे नही गुरु आण ॥ हां० ॥ मीतुं मुख उंचरे

(३१)

रे ॥ मी० ॥ जोग संयोग सौजाग्य ॥ हां० ॥ आयु
घणुं ते वरे रे ॥ आयु० ॥ ५ ॥ केणे पुण्ये बहु बुद्धि
॥ हां० ॥ चतुरता अति घणी रे ॥ च० ॥ जणे गणे
सिद्धांत ॥ हां० ॥ जणावे सहु जणी रे ॥ ज० ॥ देव
गुरुना गुण गाय ॥ हां० ॥ जक्ति गुरुनी करे रे ॥ ज० ॥
तेणे पुण्ये करी तेह ॥ हां० ॥ पंक्ति होय शिरे रे
॥ पं० ॥ ६ ॥ लखमी रहे स्थिरवास ॥ हां० ॥ कोडी
त्रिणसे नही रे ॥ को० ॥ परजव तेणे पुण्य ॥ हां० ॥
कस्यां कोण नम्मही रे ॥ क० ॥ देइ दान शुज पात्र ॥
हां० ॥ पठतावो नवि धरे रे ॥ प० ॥ तस घर रुद्धि
समृद्धि ॥ हां० ॥ सदा वासो करे रे ॥ स० ॥ ७ ॥
पौढा पुत्र प्रधान ॥ हां० ॥ होय जेहने घरे रे ॥ के
हो० ॥ नारी होय सुपात्र ॥ हां० ॥ केणे पुण्ये अनुसरे
रे ॥ के० ॥ जीवदया मन शुद्ध ॥ हां० ॥ पाले नही
कारिमी रे ॥ पा० ॥ वीर कल्याणनी कोडि ॥ हां० ॥
खहे ढाख बारमी रे ॥ ल० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केणे लक्षणे कत्री होये, केणे लक्षणे द्विज जा
त ॥ वैश्य केणे लक्षणे होय, केम होये शूद्र जात ॥
१ ॥ संग्रामे शूरो होय, पागे पग नवि देय ॥ शरणे

राखे अवरने, कत्री जाणो तेह ॥ १ ॥ जनम जातिची
शुद्ध होय, संस्कारे द्विज जाण ॥ वेद अच्यासे विप्र
होय, ब्राह्मण होय गुण खाण ॥ ३ ॥ दान दयाने सत्य
तप, शौच संयम संपन्न ॥ ब्रह्म विनय विद्या निपुण, ते
ब्राह्मण गण धन्न ॥ ४ ॥ कांकर कनक समान मति,
तजे शूद्रनुं दान ॥ करे शुश्रूषा धर्मनी, विप्र तणां
एंघाण ॥ ५ ॥ दया दान उपकार मति, असत्य तणो
परिहार ॥ बोले वचन विमासिने, वैश्य तणो व्यवहार
॥ ६ ॥ हीना धारो ^{सुख} सुख ^{धर्म} धर्म रवित जे होय ॥
अज्ञा दया न ^{शुद्ध} शुद्ध ^{गणीजे} गणीजे, साय ॥ ७ ॥ ॥ प्रश्न
जे जे पूठिया, ^{सोहम} सोहम ^{स्वामी} स्वामी ॥ ॥ त चित्त धरो
एक मने, ^{दुर्जन} दुर्जन ^{चित्त} चित्त ^{विकारी} विकारी ॥ ॥

॥ ढाल तरमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सुणजो जंबु पृष्ठा ज्ञवियण, इह परजव हित-
कारी ॥ एह सांजलतां कर्म निर्जरा, होय सही सु
खकारी ॥ १ ॥ सुणजो ॥ सोहम स्वामी जंबु तिका
री, जंबु पर उपगारी ॥ बारह परखदा बेठा पूठे, प्रश्न
सर्व सुविचारी ॥ २ ॥ सुण ० ॥ सज्जन जन ए सुण
तो हरखे, दुर्जन चित्त विकारी ॥ ३ ॥ ऊपर प्रतीति न

(३४)

आवे, जाणो ते बहुल संसारी ॥३॥ सु० ॥ श्रीपासचंद्र
सूरीसर पाटे, समरचंद्र गुणधारी ॥ तेने पाटे श्री
राजचंद्र सूरि, सुरती सोहे सारी ॥ ४ ॥ सु० ॥ शिष्य
शिरोमणि तेहना कहिये, पचम काल आहारी ॥ देव
चंद्र वणारसी दीपे, प्रागवंश शिगगारी ॥ ५ ॥ सु० ॥
जंबुपृष्ठा जणशे गुणशे, सुणशे जे नर नारी ॥ मानव
जव ते सफल करीने, थाशे सुर अवतारी ॥ ६ ॥ सु० ॥
संवत सत्तर अठावीशे, पाटण नगर मोजारी ॥ जंबुपृष्ठा
रची मन रंगे, वीरजी मुनि सुखकारी ॥ ७ ॥ सु० ॥
॥ इति श्री वीरजी मुनि कृत जंबुपृष्ठा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीगौतमपृष्ठानी चोपाई प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सकल मनोरथ पूरवे, चोवीसमो जिण चंद्र ॥
सोवनवान सोहे सदा, पखे परमानंद ॥ १ ॥ समवसर
ण देवे मली, रचीयुं उत्तम ठाम ॥ पद्यासन पूरी करी,
बेठा त्रिभुवन स्वाम ॥ २ ॥ बेठा मुनिवर केवळी, गण
हर कर अगियार ॥ सुर नर किन्नर मानवी, बेठी पा

खद बार ॥ तव गोयम मन चिंतवे, जीवितनो ए सोर
॥ जे कांई आपणथकी, कीजे पर उपकार ॥ ४ ॥ गोयम
हियडे जाणतो, आणी पर उपकार ॥ सजा सहुको
सांजले, पूठे इशो विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाइ ॥

॥ पहेला वीरजिणेसर पाय, प्रणमी गोयम गणहूर
राय ॥ कर जोडीने आगल रहे, सुखलित जाषा एणी
परें कहे ॥ ६ ॥ तुं जिन जक्ति मुक्ति दातार, तुज गुण
कोइ न पामे पार ॥ में जेव्यो त्रिचुवननो देव, पुण्य
पाप फल पूबुं हेव ॥ ७ ॥ वलतुं बोखे वीर जिणंद,
गोयम तुं आणे आणंद ॥ पूठे पृष्ठा जे तुज गमे, तस
हुं उत्तर आपीश तिमे ॥ ८ ॥ आगे मयगलने मद
जस्यो, एक पंचायणने पाखस्यो ॥ आगे गोयमनुं जग
वान, लाधुं वीर तणुं वली मान ॥ ९ ॥ जवियण जाव
जलेरो धरी, अंग तणी आलस परहरी ॥ सुणजो हर्ष
हिये उल्लसी, गोयमपृष्ठा पूठे किसी ॥ १० ॥ जगवन् !
जीव नरक शें जाय, तेहज अमर जुवन सुर थाय ॥
तिरियमांहे ते दुःख केम सहे, किशे कर्म मानव जव
खहे ॥ ११ ॥ तेहिज पुरुष पणे संसार, कीशे कर्म ते
थाये नार ॥ कहो जिनवर पुरो मन रखी, तेहज किशे

मर्षसक वली ॥ १२ ॥ थोडुं आयु होय तेह तणुं,
 किशे कर्म होये ते घणुं ॥ जोग रति शे नवि जोगवे,
 तेहिज जोग जला जोगवे ॥ १३ ॥ किशे कर्म सोजागी
 होय, किशे कर्म दोजागी जोय ॥ तेहिज बुद्धि तणो
 जंमार, किशे कर्म नवि बुद्धि लगार ॥ १४ ॥ तेहिज
 पंफितमांहे प्रधान, शे कर्म थाये अज्ञान ॥ ज्रीरु
 धीरु कोण कर्म सोय, विद्या सफल निःफल केम होय
 ॥ १५ ॥ नासे धन वाधे थिर थाय, जन्म्या पुत्र न
 जीवे कांय ॥ पौढा पुत्र घणा शे स्वामि, बहिरपणुं
 शे कर्म विराम ॥ १६ ॥ जात्यंधो नर शे अवतरे, के
 कर्म जोजन नवि जरे ॥ किशे कर्म कोढी कूबडो,
 दासपणुं पामे बापडो ॥ १७ ॥ किशे कर्म दारिद्रि
 जंत, किशे कर्म तेहज धनवंत ॥ रोगे पीड्यो पाडे री
 ध, रोग रहित शे थाये जीव ॥ १८ ॥ गोयम पूढे क
 हो जिनवीर, शे कर्म होये हीन शरीर ॥ तसु परजव
 शुं पडीयो चूक, जे एणे चवे थाये ते मूक ॥ १९ ॥
 किशे कर्म ठूंठो पांगलो, किशे कर्म रुपें आगलो ॥
 विकट कर्मनुं कहो स्वरुप, तेहिज नर केम थाये कुरुष
 ॥ २० ॥ किशे कर्म वेदना अनंत, वेदन विण केम था
 ये जंत ॥ ठांन्नी तन पंचेंद्रिय तणुं, केम पामे एकेंद्रि

यपणुं ॥ ३१ ॥ शी परें थाये थिर संसार, केस षामे
बहेलो जवपार ॥ शे संसार सोहेलो तरी, पुण्यवंत
षामे शिवपुरी ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीव सवे जगती तणा, तुं तस बंधु समान ॥
आव मनोगत सवी लहे, होय अनंतुं ज्ञान ॥ ३३ ॥
पुहवी पदारथ जे अत्रे, ते देखे मुनि देव ॥ कृपा क
री जगवन् कहो, कर्म फलाफल हेव ॥ ३४ ॥ गुण गि
रुत गणधर जलो, हर्षे जोडी हाथ ॥ सफल करो मुज
विनति, जतिय जणी जगनाथ ॥ ३५ ॥ गोयम गणहर
विनव्यो, एणी परें वीरजिणंद ॥ नमे निरंतर पय
कमल, जेहना चोशठ इंद ॥ ३६ ॥ वीतराग वलतुं
वदे, वाणी सरस अपार ॥ सुण गोयम गणधार तुं,
पूठ्या तणो विचार ॥ ३७ ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ गोयम पृष्ठा पूठी रहे, वलतुं वीर जिनेसर क
हे ॥ सावधान सवि परषद हुइ, निसुणे निज ज्ञाषा
जूजूइ ॥ ३७ ॥ वरसे स्वामि वचन विलास, पोहोचे
जवियण जन मन आश ॥ आषाढो सासाढो मेह,
करी गाजीनें आढ्यो एह ॥ ३८ ॥ तेणे अवसर नावी

तृषं चूख, नाठां डुरिय सरीसां दुःख ॥ मधुरी वाणी
 सुणी जव कान, मधुर पाणुं नहि कहेने मान ॥ ३० ॥
 सरस कवण कहीये सूखडी, जेणे खाधे चांगे चूख
 डी ॥ जिनवर वाणी निसुणी जाम, ते विपरीत व
 खाणे ताम ॥ ३१ ॥ जे शेलडी सरस रस घडी, ते
 पण कहेने चित्ते नवि चडी ॥ जाति अने उजाति दे
 खवे, गोल खांरु खारी लेखवे ॥ ३२ ॥ सुधा मुधा
 सवि कहे मन थाय, साकर कांकर सम तोलाय ॥ नी
 ली डाख न गमे सराख, एकज मीठी जिननी चाख
 ॥ ३३ ॥ इसी वाणी जिन मुखे उच्चरी, गोयम बो
 लाव्यो हित करी, एकज जीव लहे दुःख घणां, सुण
 गोयम कारण तेह तणां ॥ ३४ ॥ जीव विणासे जंपे
 अक्षी, जे नर परधन चोरे वली ॥ परनारीशुं रंगे रमे,
 पाप परिग्रह जाजो गमे ॥ ३५ ॥ रात्रि दिवस रीशे
 धडहडे, अजिमाने मानवने नरे ॥ कोश तणो आणे
 आकार, नीचा नमणा नहिं लगार ॥ ३६ ॥ मुखमीठो
 मन माया करे, कहो ते किम जवसागर तरे ॥ हियडे
 नितुरो वयण कठोर, पापी पाप करे अति घोर ॥ ३७ ॥
 जीवे ठिड कुमतिनो धणी, मनमां मूर्छा धरे अति घ
 णी ॥ जे अधमाधम विण अपराध, गोठे बेठो निंदे

साध ॥ ३७ ॥ जे मानवने एहवो ढाल, प्राये दीके
अणहुंतां आल ॥ एवी मति जस पोते ठती, गुण की
धो नधि जाणे रति ॥ ३९ ॥ बीर जणे सुण गोयम वा
त, इस्यां कर्म जे करे निघात ॥ दोहिलां दुःखमांहे त
डफडे, ते नर मरी नरके रडवडे ॥ ४० ॥ तप संयम
दाने चौशाल, जावे जडक अने दयाल ॥ शीषे वहे
सजुरुनी आण, ते नर पामे अमर विमान ॥ ४१ ॥
मानव सरसी मांहे प्रीत, काज आपणुं चाले चित्त ॥
वांगित काज सखुं ततकाल, वेहेली प्रीति करे विसरा
ल ॥ ४२ ॥ जोतां दरिसण क्रूर अपार, कोइ न पामे
मननो पार ॥ कीधां कर्म जीवशुं करे, तिहांथी मरी
तिरिय अवतरे ॥ ४३ ॥ सरल चित्त सुकुमाल अपार,
क्रोध लोच मन नहीय लगार ॥ जीव तणी नित्य ज
यणा करे, साते खेत्रे धन वावरे ॥ ४४ ॥ वोहोरे विण
जे न्याये करी, मूके पोतुं पुण्ये जरी ॥ साधु तणा
पाय सेवे घणुं, लहे जीव ते मानवपणुं ॥ ४५ ॥ संतो
षी विनये गुण वहे, सरल चित्त शीखे दृढ रहे ॥ सत्य
वचन जे बोले नार, थाये पुरुष मरी संसार ॥ ४६ ॥
चपस पणे धूतारे लोक, मूरख पातक बांधे फोक ॥
कूड कपट मायाये बहु, सगां सणीजां वंचे सह ॥ ४७ ॥

मन विश्वास नही केह तणो, वीर जणे गोयम तुमे
 सुणो ॥ एहवां कर्म करे नर जेह, परजव महिला
 थाये तेह ॥ ४० ॥ मानव तुरी समारे ढोर, वींधे नाक
 परोवे दोर ॥ गल कंबल ठेदे अज्ञान ॥ कौनुक का
 रण कापे कान ॥ ४१ ॥ इस्यां कर्म जे करे नवीन,
 सविहु माणसमांहे हीन ॥ नवि नारी ते नहि नर
 मांय, गोयम सोय नपुंसक थाय ॥ ५० ॥ जीव वि
 णासे नितुरजपणे, जे परलोक न माने गणे ॥ चित्त
 मांहे जस घणो कलेश, ते नर आयु लहे लवलेश ॥
 ॥ ५१ ॥ राखे जीवदया नर थई, अजयदान ऊपर
 मति रही ॥ जाजुं आयु लहे नर तेह, गोयम ए तुं म
 धर संदेह ॥ ५२ ॥ ठतुं अन्न देवा मांमे व्याप, देइने
 मने करे संताप ॥ मुजने पडियो वरांसो घणो, आप्यो
 अर्थ शोक आपणो ॥ ५३ ॥ आपणने मति देवा टली,
 बीजा देतां वारे वली ॥ गोयम एहवे कर्मे जोय, जो
 ग रहित जव पूरे सोय ॥ ५४ ॥ वारु वख पाटो पाट
 ला, जात पात्रने पाणी जखां ॥ ऋषिने दे हियडे गह
 गही, परजव जोग लहे ते सही ॥ ५५ ॥ गुरु गिरुआ
 तीर्थकर साध, तेहनो जे न करे अपराध ॥ विनय वहे
 मूकी अचिमान, दर्शन जेहनुं सोम समान ॥ ५६ ॥

वाणी अमीअ समाणी जरे, विरुआं वचन सदा परि
 हरे ॥ वीर वदे गोयम गुणवंत, ते परजव सोजागी
 संत ॥ ५७ ॥ गुणविण गर्व घणो मन धरे, तपसीनी
 जे निंदा करे ॥ मानी धर्मविडंबक होय, परजव नर
 दोजागी सोय ॥ ५८ ॥ पढे गुणे चिंते सुविशेष, अ
 वर जणी वली दिये उपदेश ॥ सहगुरु जक्ति करे मन
 शुद्ध, परजव पामे चोखी बुद्ध ॥ ५९ ॥ तपसी ज्ञान
 वंत गुणवंत, तास अवज्ञा करी हसंत ॥ ए अजाण
 मुख एणी परें कहे, ते नर मरीने बुद्धि नवि लहे ॥
 ॥ ६० ॥ माय ताय सेवे मन खरे, अवर वडाने आदर
 करे ॥ धर्माधर्म विगत जुजुइ, पृष्ठे सावधान जे हुइ
 ॥ ६१ ॥ आराधे जिनवरनां वयण, जेणे उघडे हियानां
 नयण ॥ देव अने गुरुना गुण गाय, मरी पुरुष ते पंनि
 त थाय ॥ ६२ ॥ मन माने तेम जीव विणास, खान
 पीन ने करो विलास ॥ पढे गुणे धर्मे शुं होय, एम
 चितवतो मूरख होय ॥ ६३ ॥ कूकड तित्तर छावां
 चडां, सूअर हिरण रोज बापडां ॥ वन जमतां जे
 आणे धरी, बीकण होये सदा ते मरी ॥ ६४ ॥ जीव
 सवि ऊपर हित सदा, जय न करे न करावे कदा ॥
 पीड पराइ वजे जेह, गोयम धीर होवे नर तेह ॥

॥ ६५ ॥ लीये वारु विद्या विज्ञान, कूडो विनय करे
 अज्ञान ॥ विद्यागुरुने अपमाने बहु, तेहनं जण्युं निः
 फल होय सहं ॥ ६६ ॥ विद्यागुरुनी जक्तिये जस्यो,
 माने विनय गुणे परिवस्यो ॥ एणी परे जे जे विद्या
 जणी, सघली सफल होवे तेह तणी ॥ ६७ ॥ देई
 दान् हीये न समाइ, मन चिंते में दीधुं कांइ ॥ तस
 घर लक्ष्मी वहेली मले, गण्या दिवसमांहे पण टले
 ॥ ६८ ॥ थोडे धने नित्य वाधे व्याह, दीये देवरावे
 जे पर प्राह ॥ पुण्यथकी परजव रंगरोल, तसु घर क
 मला करे कद्धोल ॥ ६९ ॥ जे जेहने मनगमतुं होय,
 जाव सहित ऋषिने दिये सोय ॥ देई मन उच्चाट न
 जास, तस घर लक्ष्मी रहे थिरवास ॥ ७० ॥ पशु पं
 खी माणसनां बाल, जे पापी पीडे विकराल ॥ तस
 घर ठोरु न होये शिरे, जो होये तो निश्चय मरे ॥
 ॥ ७१ ॥ जेह तणे मन दया प्रधान, गोयम तस घर
 बहु संतान ॥ अणसांजद्वयुं सुण्युं कहे जेह, परजव
 वहेरो थाये तेह ॥ ७२ ॥ अणदीठाने दीतुं जणे, धर्म
 उवेखे मूरख पणे ॥ कर्म तणी गति विषमी जोय, ते
 परजव जात्यंधो होय ॥ ७३ ॥ निखर अन्न ने विरुड
 वारि, साधुने दीये जे नर नारि ॥ मन जाणि कृपणाये

करे, परचव तस जोजन नवि जरे ॥ ७४ ॥ पाडे मध
 जे दव दीये वेड, तेहनी दैव करे शी केड ॥ पाप तणी
 मन नाणे शंक, जे नर जीव प्रत्ये दिये अंक ॥ ७५ ॥
 बालां कुलां नीलां हरी, खांते खुंटे लीलां करी ॥ की
 धां कर्म जीव शुं करे, मरी पुरुष कोढी अवतरे ॥ ७६ ॥
 उंट बलद जेंसा ठालकां, जारे पीडे लोची थकां ॥ इम
 पापे पूराये घडो, ते परचव थाये कूवडो ॥ ७७ ॥ जाति
 मदे मदमातो फिरे, जीव तणो जे विक्रय करे ॥ जे
 कृतघ्न अवगुण आवास, ते नर परचव थाये दास ॥
 ॥ ७८ ॥ विनय हीन वर्जित चारित्र, दान तणा गुण
 नहिय पवित्र ॥ मनसादिक जे नवि संवरे, ए नर
 दारिद्री अवतरे ॥ ७९ ॥ विनयवंत दाने उच्चसे, चा
 रित्रना गुण वासे वसे ॥ लोकमांहे तस कीर्ति घणी,
 महोटी रुद्धि तणो ते धणी ॥ ८० ॥ विश्वासी पाडे
 संताप, सूधे मन न आलोवे पाप ॥ गोयम इसे कर्मे
 मन नडे, ते नर रोगे पीड्यो रडे ॥ ८१ ॥ विश्वासी
 राखे हित करी, आलोयण आलोये खरी ॥ परचव
 तसु महिमा ए वडो, रोग न आवे घर हुंकडो ॥ ८२ ॥
 करे जे लघु लाघव केटला, हुं जाणुं नर नहीं ते जला ॥
 कूडे तोखे करे कुंसाट, अधिक लेइने आपे घाट ॥ ८३ ॥

प्रत्यक्ष पुरुष न बीहे पाप, वली वरांसे पाडे माप ॥
 खोजे खेवा हिंके बहु, नखर क्रियाणुं वेचे सहु ॥ ७४ ॥
 जेह तणे मन अति अजिमान, माने अवरने तृण स
 मान ॥ खेइ आपतां करे जे खांच, मुख बोलंतां नहिं
 खल्ल खांच ॥ ७५ ॥ पाप बहुल मांके विवसाय, इस्या
 अवर जे करे उपाय ॥ ते नर परजव दुःखियो दीन,
 सघलां अंग हुवे तसु हीन ॥ ७६ ॥ संयम सहित गुणे
 महगहे, जे सुसाधु शीले दृढ रहे ॥ तास पूंठ करवे
 पडवडो, ते परजव थाये बोबडो ॥ ७७ ॥ जेहने धर्म
 तणी नही धांख, ठेदे पंखी जातिनी पांख ॥ तेहनुं
 जव आयुखुं पते, थाये वूंगो जव आवते ॥ ७८ ॥ दया
 रहित कहे दिन रात, पशु कुमारां प्रत्ये कुजाति ॥
 गाये घाय करे गल्लगलो, परजव ते थाये पांगुलो ॥ ७९ ॥
 सरल स्वजाव धर्म अहिठाण, जीव जतन जे करे सु-
 जाण ॥ जिन गुरु पाय जक्तो नित्य होय, रूपे मदन
 सरीखो सोय ॥ ८० ॥ मन वांकडो करे नित्य पाप,
 होंशे जीव विराधे आप ॥ जेहने देवगुरुशुं खेश, रूप
 न पामे ते खवलेश ॥ ८१ ॥ यंत्र तंत्रने नाडी दोर,
 खजे कुंते करी कठोर ॥ जे पापी पीडे पर जंत, ते
 पामे बेदना अनंत ॥ ८२ ॥ प्राणी संकट पड्यो अर्चित,

बंधन मरणे थयो जयजीत ॥ दया करी मूकात्रे कोय,
तसु शिर वेदन निखर नवि होय ॥ ९३ ॥ हियमें
नेहने निविड परिणाम, अति अज्ञान महाजय जाम ॥
कर्म आशातावेदनी घणुं, तव पामे एकेंद्रियपणुं ॥
॥ ९४ ॥ पुण्य पाप परलोक न आज, त्रिजुवन को न
थी ऋषिराज ॥ जे नर माने ईश्यो विचार, गोयम
तेहने थिर संसार ॥ ९५ ॥ पुण्य पाप ठे लोक मजार,
ठे जिन सेवित सुगुरु नर नार ॥ महिमंरुल मुनिवर
ठे सही, माने ते संसारी नही ॥ ९६ ॥ निर्मल ज्ञान
अठे चारित्र, दर्शन चूषित देह पवित्र ॥ ते नर मरी
तरी संसार, थाये शिवपुर तणो शिणगार ॥ ९७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जं जं गोयम पूढियुं, वीरजिणेसर पास ॥ तं क
हियुं त्रिजुवन गुरे, गिरुआ वचन विलास ॥ ९८ ॥
चविक लोक तुमे सांजली, वाणी बहुत विचार ॥ पु
ण्य पापफल प्रगटवे, प्रीठो हृदय मजार ॥ ९९ ॥ पृढा
उत्तर बेहु मली, अडचालीश प्रमाण ॥ अरथ बहुल
तुमे जाणजो, जग जयवंता जाण ॥ १०० ॥ पढ्या
गुण्या प्रीढ्या तणो, कवि कहे एहज मर्म ॥ दया स
हित आदर करी, कीजे जिनवर धर्म ॥ १०१ ॥

(४६)

॥ चोषाइ ॥

॥ वीरविमल केवलनुं गेह, ज्ञांज्या जविक तणा
संदेह ॥ हरष्यो तव गोयम गणधार, सजा सहु जंपे
जयकार ॥ १०२ ॥ समयरत्न जयवंत मुणीश, एम
जंपे जग तेहनो शिष्य ॥ सुणजो वर्णावर्ण अठार, ठति
सारु करजो उपकार ॥ १०३ ॥ लहे अरथ गोयम
गणधार, तो पण आणी पर उपकार ॥ वीर कन्हे
बहु पृष्ठा कीध, जविक प्रत्ये प्रतिबोधज दीध ॥ १०४ ॥
एम जाणी कवि करे विचार, जून एह संसार असार
॥ पुत्र कलत्र पोढां घरबार, रहेशे सोवन धन शणगार
॥ १०५ ॥ जातां जीव न लागे वार, काया कूटी कीजे
ठार ॥ जनमतणुं एहिज फल सार, कीजे कांई पर
उपकार ॥ १०६ ॥ हियडे अवर म धरजो जर्म, ते
उपकार कहीजे धर्म ॥ पुण्य पाप साथे आवशे, सहु
आपणे काज लागशे ॥ १०७ ॥ कवि कहे हुं शुं बोलुं
बहु, जिनवर तो जाणे ठे सहु ॥ पुण्यकाज करशो
एक ससा, शिवसुख लेहशो वीशे वसा ॥ १०८ ॥ श्री
मुख गौतम पृष्ठा करे, वीर सरीखा संशय हरे ॥
बेहनी वाणी अमृत समान, अमृत वाणी एहनुं अजि
धान ॥ १०९ ॥ एह चोषाइ रची चौशाल, कोण संवत

ने केहो काल ॥ वरस मास कहिशुं दिन वार, जोई
 लेजो जाण विचार ॥ ११० ॥ पहेली तिथिनी संख्या
 आण, संवत्त जाणो एणें अहिनाण ॥ बाण वेद जो
 वांचो वाम, जाणो वरष तणुं ते नाम ॥ १११ ॥ वासुपूज्य
 जिनवर जे नमो, चैत्रथकी मासज ते तमो ॥ अजूआ
 ली अगीयारस सार, तिहां सुरगुरु गिरुठं गुरुवार ॥
 ॥ ११२ ॥ डुहा सवे बाणुं चोपाइ, एक जपमाळा पूरी
 थाइ ॥ ऊपर अधिको पाठ वखाण, ते संख्याना मणि
 या जाण ॥ ११३ ॥ एम गणतां जे आवे दोय, सहस
 लाखनी संख्या होय ॥ एक रहे सविहुकोनो वतु, ते
 ऊपर फरके फूमतुं ॥ ११४ ॥ उं जपमाळी एक गुण
 वहे, एहना गुण कोइ पार न लहे ॥ पगपग बिंडु हुये
 वली तिहां, गणतां बिड्र नही वली जिहां ॥ ११५ ॥
 जोतां गुण दीसे अति घणा, वारु वर्ण अढे तेह तणा ॥
 पढतां गुणतां सुणतां सार, सविहुं ऊपर सुख दातार
 ॥ ११६ ॥ मानव मन माया परिहरो, मेली काया नि
 र्मल करो ॥ आ जपमाळी हीयडे धरो, मुक्ति वधू
 जिम लीलाये वरो ॥ ११७ ॥ ध्यान धरीने आप उद्धरो,
 कूडी कुबुद्धि ते परिहरो ॥ मोह मूको नाणो अजिमा
 न, एक मना ध्यातुं धर्म ध्यान ॥ आश अच्यारुयान

परिहरो, रयणीजोजन ते मत करो ॥ ११७ ॥ श्री सम
केत शुं वारे व्रत, जाग्यवंत पाले ए चित्त ॥ अतीत
अनागतने वर्त्तमान, ए त्रण काल करे जिन ध्यान ॥
॥ ११८ ॥ कीधां कर्म जो बूटे तोय, दान शील तप
मति जो होय ॥ मन शुद्धि विण सहु ए आल, जेम
जो जाणो होय इंद्रजात्र ॥ ११९ ॥ कर्म करे जीव
काया सहे, हीये विचारी जोइ ते लहे ॥ एक मना
समरो नवकार, पूरव चौदमांहे जे सार ॥ १२० ॥ ए
संसार असारह अठे, विगते जाणशो तमे पठे ॥ आ
जपमाली हियडे धरो, मुक्तिवधू जेम लीला वरो ॥
॥ १२१ ॥ जपमालीशुं संख्या कही, को जाणे को जा
णे नही ॥ कवि कहे कुणही म करशो रीश, सर्वे मली
ने होये एकवीश ॥ १२२ ॥ अणजाणतां कहुं होये
अलि, अधिकुं उंहुं खमजो वली ॥ मुनि लावण्यसमय
कहे इस्युं, धन्य मन जे जिन वचने वस्युं ॥ १२३ ॥

॥ इति श्री गौतमपृष्ठा चोपाइ संपूर्ण ॥



